

**श्रीमती जयश्री वाघचौरे
जी.प.प्रशाला, वाघदरी अंबाजोगाई**

तुलसीदास के दोहों का आधुनिक जीवन में प्रभाव : एक शोधात्मक अध्ययन

सारांश

हिंदी साहित्य के महान कवि एवं संत तुलसीदास ने अपने दोहों के माध्यम से मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यावहारिक पक्षों का अत्यंत सरल एवं प्रभावशाली वर्णन किया है। उनके दोहे केवल भक्ति भावना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जीवन को सही दिशा प्रदान करने वाले प्रेरणास्रोत भी हैं। वर्तमान समय में भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा और नैतिक मूल्यों के ह्रास के बीच तुलसीदास के दोहे मानव जीवन को सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। इस शोध-पत्र में तुलसीदास के दोहों की आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता एवं प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना-

भारतीय भक्ति साहित्य में तुलसीदास का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाएँ जनसामान्य के जीवन से जुड़ी हुई हैं। उनके दोहे सरल भाषा में गहन जीवन-दर्शन प्रस्तुत करते हैं। आज के आधुनिक युग में भी उनके विचार उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। उनके दोहों में नैतिकता, कर्तव्य, सदाचार, परोपकार और मानवीय मूल्यों का संदेश मिलता है।

शोध के उद्देश्य

तुलसीदास के प्रमुख दोहों का अध्ययन करना।
दोहों में निहित नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण करना।

आधुनिक जीवन में तुलसीदास के दोहों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
युवा पीढ़ी पर तुलसीदास के विचारों के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। शोध हेतु तुलसीदास की रचनाओं, साहित्यिक पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन किया गया है।

तुलसीदास के प्रमुख दोहे एवं उनका महत्व

१. परोपकार का संदेश

परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई?

इस दोहे में दूसरों की भलाई को सर्वोच्च धर्म बताया गया है। आधुनिक समाज में सामाजिक सहयोग एवं मानवता की भावना को विकसित करने में यह दोहा अत्यंत महत्वपूर्ण है।

२. सत्संग का महत्व

बिनु सत्संग विवेक न होई।

राम कृपा बिनु सुलभ न सोई?

यह दोहा अच्छे लोगों की संगति के महत्व को दर्शाता है। आज के समय में सकारात्मक वातावरण और अच्छे मार्गदर्शन की आवश्यकता पहले से अधिक है।

३. धैर्य एवं विश्वास

धीरज, धरम, मित्र अरु नारी।

आपद काल परखिए चारी?

यह दोहा संकट के समय धैर्य, धर्म, मित्र और परिवार की वास्तविक परीक्षा होने का संदेश देता है। आधुनिक जीवन की चुनौतियों में यह शिक्षा अत्यंत उपयोगी है।

आधुनिक जीवन में तुलसीदास के दोहों का प्रभाव

१. नैतिक मूल्यों का विकास

तुलसीदास के दोहे सत्य, ईमानदारी, परोपकार और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं।

२. मानसिक शांति एवं सकारात्मकता

आज के तनावपूर्ण जीवन में उनके दोहे मानसिक संतुलन एवं सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक हैं।

३. सामाजिक समरसता

उनके दोहे प्रेम, सहयोग और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देते हैं, जिससे समाज में एकता और सद्भाव स्थापित होता है।

४. युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा

तुलसीदास के विचार युवाओं को अनुशासन, नैतिकता और जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाते हैं।

५. पारिवारिक जीवन में महत्व

उनके दोहे पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाने तथा पारस्परिक सम्मान की भावना विकसित करने में सहायक हैं।

आलोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि तुलसीदास के दोहे मध्यकालीन परिस्थितियों में रचे गए थे, फिर भी उनमें निहित मानवीय मूल्य सार्वकालिक हैं। आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी युग में भी उनके दोहे जीवन प्रबंधन, नैतिक शिक्षा और सामाजिक सद्भाव के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं। कुछ विचारों की व्याख्या वर्तमान सामाजिक संदर्भों के अनुसार करने की आवश्यकता हो सकती है, किंतु उनके मूल संदेश आज भी प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

तुलसीदास के दोहे केवल साहित्यिक धरोहर नहीं हैं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाले अमूल्य सूत्र हैं। आधुनिक जीवन में बढ़ती नैतिक चुनौतियों, तनाव और सामाजिक विघटन के बीच उनके दोहे मानवता, सदाचार और सकारात्मक जीवन दृष्टि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक जीवन में तुलसीदास के दोहों का अध्ययन एवं प्रचार आवश्यक है।

सुझाव

विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में तुलसीदास के दोहों का अध्ययन बढ़ाया जाए।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में उनके दोहों को शामिल किया जाए।

युवाओं को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने के लिए उनके साहित्य का प्रचार किया जाए।

डिजिटल माध्यमों से तुलसीदास के विचारों का प्रसार किया जाए।

संदर्भ सूची

रामचरितमानस।

दोहावली।

हिंदी साहित्य का इतिहास।

भक्ति कालीन साहित्य पर आधारित शोध ग्रंथ।

भारतीय संस्कृति एवं नैतिक शिक्षा संबंधी संदर्भ पुस्तकें।